कबीर का दर्शन

दिनेश कुमार उपाध्याय

कबीर ने अपने 'निर्गुणराम' की अनुभूति की अभिव्यक्ति करते हुए जगत, जीव, मोक्ष, माया, आदि के सम्बन्ध में अनेक स्थानों पर अनेक टिप्पणियाँ की है। कबीर ने इन्हीं कथनों के आधार पर कबीर साहित्य के अध्येताओं एवं समीक्षको ने उनके दार्शनिक चिन्तन के विश्लेषण का प्रयास किया है। इतना होते हुए कबीर अपनी अखण्ड अनुभूति की अभिव्यक्त करते हुए भी इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात ये है कि कबीर को किसी भी रूप में दार्शनिक नहीं माना जा सकता है। वास्तव में कबीर मूलतः एक भक्त थे। इसलिए उनके कथनों में एक दार्शनिक की तरह तर्क संगतता बौद्धिकता एवं सुंसगता नहीं मिलता है। इतना होते हुए कबीर अपनी अखण्ड अनुभूति की अभिव्यक्त करते हुए दर्शन की विभिन्न पक्षों के संदर्भ में जो कथन किये है उन्हीं के परिप्रेक्ष्य में कबीर के दर्शन का अध्ययन किया जा सकता है। कबीर के एक सुसंगत दार्शनिक न होने के कारण ही उनके दार्शनिक व्यक्तित्व को लेकर विद्वान आलोचकों के मध्य कुछ विवाद भी दिखाई देता है। जहाँ एक ओर मध्यकालीन इतिहासकार मोहसिन फासिंन ने उन्हे मुआविद (एकेश्वरवादी) कहा, वही दूसरी ओर आधुनिक विद्वान डा0 श्यामसुन्दर दास ने कबीर को अद्वैतवादी कहा है। इसी तरह आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर के दार्शनिक चिन्तन पर विचार करते हुए उन्हे द्वैताद्वैत विलक्षण समतत्ववादी बताया है तो आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने उनके राम को सगुण निर्गुण से परे पूर्णतः उनके मौलिक चिन्तन की देन माना है।